"नदी की दुर्दशा"

प्रिया देवांगन

कहाँ गये वो दिन अब सारे, पास सभी जब आते थे।
कभी खुशी की बातें करते, गम भी कभी सुनाते थे।।

कलकल-कलकल बहती रहती, दिखती सुंदर हरियाली।
फूल खिले जब रंग-बिरंगे, झूमे पीपल की डाली।।
जामुन अमुआ अमरुद इमली, तोड़-तोड़ ले जाते थे।
कहाँ गये वो दिन अब सारे, पास सभी जब आते थे।।

मछली मेंढक सर्प केंचुआ, मस्त मजे से रहते थे।
उछल-कूद करते थे मिलकर, भाषा अपनी कहते थे।
स्वच्छ नीर की निर्मल धारा, अपनी प्यास बुझाते थे।
कहाँ गये वो दिन अब सारे, पास सभी जब आते थे।।

मानव जब भी गम में होते, शांत सभी को करती थी।
ठंडी ठंडी पवन चले जब, तन में आहें भरती थी।
बैठ किनारे बातें करते, हँसते और हँसाते थे।
कहाँ गये वो दिन अब सारे, पास सभी जब आते थे।।

सूखी-सूखी पड़ी अकेली, अब मानव भी मुख मोड़े।
नीर बहाती रहती हूँ मैं, जीव-जंतु मुझको छोड़े।।
पहले जैसी नहीं रही मैं, आकर गले लगाते थे।
कहाँ गये वो दिन अब सारे, पास सभी जब आते थे।।

अंगों से सीख

काले भूरे गोरे रंग। देखो कितने सुंदर अंग।।
नयन सदा ही खुलते संग। देखें दुनिया बढ़े उमंग।।

नेक काज करते हैं हाथ। इक दूजे का देते साथ।।
सीख हमें देते हैं बाल। रखो एकता बनो मिसाल।।

आगे बढ़ते जाते पैर। मिलकर करते जग की सैर।।
मुख से निकले मीठे बोल। जीवन में देता मधु घोल।।

करे इकट्ठा भोजन पेट। भरता तन में शक्ति समेट।।
नाक एक है लेती श्वास। सिखलाती जीवन है खास।।

सदा सोचता रहे दिमाग। बड़ा अहम यह तन का भाग।।
इसके बिन होता ना काम। तनिक नहीं करता आराम।।

चलो करें अंगों से प्यार। कभी नहीं होंगे बीमार।।
स्वस्थ रहें गर ये सब अंग। करें नहीं जीवन भर तंग।।

प्रिया देवांगन